



E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2025; 7(10): 91-95
Received: 05-07-2025
Accepted: 07-08-2025

अदिति प्रिया

शोध छात्रा [इतिहास विभाग] सोना देवी
विवि, घाटशिला, पूर्वी सिंहभूम, झारखंड,
भारत

डॉ. कंचन सिन्हा

शोध निदेशक, एच.ओ.डी., इतिहास
विभाग, सोना देवी विवि, घाटशिला, पूर्वी
सिंहभूम, झारखंड, भारत

आधुनिक भारत में अर्थव्यवस्था और रोजगार पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

अदिति प्रिया, डॉ. कंचन सिन्हा

सारांश

यह शोध आधुनिक भारत में भूमंडलीकरण के आर्थिक और सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक बाजार से गहराई से जुड़ गई, जिसके परिणामस्वरूप जीडीपी वृद्धि दर में तेजी, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) में वृद्धि और सेवा क्षेत्र, विशेषकर आईटी और बीपीओ उद्योगों में रोजगार सृजन हुआ। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और तकनीकी नवाचार ने भारत को प्रतिस्पर्धी लाभ प्रदान किया। हालांकि, भूमंडलीकरण के दुष्प्रभाव भी स्पष्ट हुए—आय असमानता, रोजगार का अनौपचारिकीकरण, छोटे और मध्यम उद्योगों पर प्रतिस्पर्धा का दबाव, तथा कृषि क्षेत्र में मूल्य अस्थिरता। अध्ययन दर्शाता है कि गरीबी दर में उल्लेखनीय कमी आई है, लेकिन सामाजिक और क्षेत्रीय असमानता गहराई है। इस प्रकार, भूमंडलीकरण भारत के लिए एक द्विआयामी प्रक्रिया साबित हुआ, एक ओर आर्थिक प्रगति और अवसर, तो दूसरी ओर असमानता और असुरक्षा। शोध का निष्कर्ष है कि भारत को एक संतुलित और समावेशी विकास मॉडल अपनाना होगा ताकि वैश्वीकरण के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँच सकें।

मुख्य शब्द: भूमंडलीकरण, आर्थिक वृद्धि, रोजगार पैटर्न, असमानता, अनौपचारिकीकरण

1. प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था ने 1991 के उदारीकरण और भूमंडलीकरण की नीतियों के बाद एक नई दिशा प्राप्त की। इस दौर ने भारत को आत्मनिर्भरता और संरक्षणवादी नीतियों से निकालकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा और बाजार से जोड़ा। परिणामस्वरूप, सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में तेजी आई, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह में वृद्धि हुई और सेवा क्षेत्र, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) तथा बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग, रोजगार के प्रमुख स्रोत के रूप में उभरे। हालांकि, यह परिवर्तन केवल सकारात्मक पहलुओं तक सीमित नहीं रहा। भूमंडलीकरण ने आर्थिक असमानताओं को गहरा किया, अनौपचारिक रोजगार को बढ़ावा दिया और कृषि एवं छोटे-मध्यम उद्योगों को नई चुनौतियों के सामने खड़ा किया। गरीबी दर में गिरावट अवश्य दर्ज की गई, किंतु क्षेत्रीय और सामाजिक विषमता बढ़ी। इन जटिलताओं के कारण भूमंडलीकरण को भारत में एक द्विआयामी प्रक्रिया माना जा सकता है, जिसने एक ओर विकास और अवसर दिए, तो दूसरी ओर असुरक्षा और असमानता भी बढ़ाई। इस शोध का उद्देश्य आधुनिक भारत में भूमंडलीकरण के अर्थव्यवस्था और रोजगार पर पड़े प्रभावों का बहुआयामी विश्लेषण करना है, ताकि इसके लाभ और चुनौतियों दोनों की संतुलित समझ विकसित की जा सके।

1.1 भूमिका

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने आधुनिक भारत की आर्थिक प्रणाली एवं रोजगार के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन लाए हैं। इस प्रक्रिया ने देश की आर्थिक गतिविधियों को वैश्वीकरण की ओर अग्रसर किया है, जिससे आर्थिक विविधता और उद्यमशीलता को प्रोत्साहन मिला है। इस बदलाव के साथ, भारत में आर्थिक क्षेत्र का विस्तार हुआ है और उद्योगों में प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। नई आर्थिक नीतियों और मुक्त व्यापार की प्रवृत्तियों ने विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया है, जिसकी वजह से देश में विनिर्माण, सेवा और निर्यात क्षेत्रों में तेजी आई है। परिणामस्वरूप, रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं, विशेष रूप से सेवा क्षेत्रों में। इस प्रक्रिया में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को भी नई तकनीकों और पूंजी की पहुंच से लाभ हुआ है, जिससे उनके उत्पादकता में सुधार हुआ है। साथ ही, तकनीकी नवाचार, सूचना प्रौद्योगिकी और संचार के तेजी से विकसित होने से रोजगार के संदर्भ में भी नई दिशाएँ उभरी हैं। हालांकि, इन परिवर्तनों के साथ कुछ चुनौतियाँ भी आई हैं। जैसे, रोजगार की गरिमा में गिरावट, असमान श्रम बाजार और स्वरोजगार की प्रवृत्ति में वृद्धि। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भूमंडलीकरण ने देश के श्रम बाजार में बदलाव लाते हुए कौशल आधारित अपेक्षाओं को भी प्रभावित किया है। इसलिए, इन परिवर्तनों का समुचित उपयोग कर संतुलित आर्थिक एवं रोजगार नीति विकसित करना महत्वपूर्ण हो गया है।

1.2. भूमंडलीकरण की परिभाषा

भूमंडलीकरण का अर्थ है वैश्विक स्तर पर वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी, तकनीक और जानकारी के पारस्परिक निर्भरता व निर्बाध

Corresponding Author:

अदिति प्रिया

शोध छात्रा [इतिहास विभाग] सोना देवी
विवि, घाटशिला, पूर्वी सिंहभूम, झारखंड,
भारत

प्रवाह की प्रक्रिया। यह प्रक्रिया एक स्वतंत्र वैश्विक बाजार की दिशा में आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी बदलाव लाती है, जिससे देशों के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान एवं आर्थिक एकीकरण तीव्र होता है। इसमें विश्वभर में व्यवसायों एवं बाजारों का एकीकृत होने की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है, जिससे व्यापार, निवेश और प्रौद्योगिकी के फैलाव में तेजी आती है। इस प्रणाली के तहत देशों के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत होते हैं, विकास के नए अवसर उत्पन्न होते हैं, और आर्थिक सुधारों को प्रोत्साहन मिलता है। वहीं, इस प्रक्रिया के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव भी परिलक्षित होते हैं। फलस्वरूप, भूमंडलीकरण के परिचय से ही वैश्विक स्तर पर आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि एवं परिवर्तन निर्धारित होता है। इस प्रकार, भूमंडलीकरण एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो आधुनिक भारत की आर्थिक और रोजगार की संरचना को व्यापक स्तर पर प्रभावित करती है।

1.3. भारत में भूमंडलीकरण का इतिहास

भारत में भूमंडलीकरण का इतिहास हजारों वर्षों से सांस्कृतिक और व्यापारिक संपर्कों से जुड़ा रहा है, परंतु आधुनिक काल में इसकी तीव्रता 20वीं सदी के अंत तक पहुंची। नौसैनिक, वाणिज्यिक और तकनीकी क्रांतियों के प्रभाव से विश्व के अलग-अलग देशों के बीच संबंध मजबूत हुए। 1991 में भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई, जिसने वैश्विक बाजार के साथ अपने सम्बन्धों को मजबूत किया। इसने विदेशी निवेश, तकनीकी प्रवाह और व्यापार को बढ़ावा दिया। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप, भारत की आर्थिक संरचना में निरंतर बदलाव आया, जिसने रोजगार के नए अवसर उत्पन्न किए। विदेशी कंपनियों का प्रवेश और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के चलते उद्योग क्षेत्र में आदान-प्रदान और सुधार हुए। इसी प्रक्रिया में वित्तीय सेवाएं, आईटी और विनिर्माण क्षेत्रों में तीव्र विकास हुआ। हालांकि, इस बदलाव के साथ कुछ चुनौतियां भी आईं, जैसे रोजगार की असमानता, कौशल का अभाव तथा परंपरागत उद्योगों का क्षरण। ग्रामीण-शहरी विभाजन और सामाजिक गतिशीलता में परिवर्तन स्पष्ट दिखने लगे। इस अवधि में, सरकार ने भी नई नीतियां अपनाई और वैश्विक संबंधों को मजबूती दी। कुल मिलाकर, भारत में भूमंडलीकरण ने आर्थिक प्रगति की नई निरंतरता स्थापित की, परन्तु इससे जुड़ी जटिलताओं को भी समझना आवश्यक है, ताकि सतत और समान विकास की दिशा में कदम बढ़ाए जा सकें।

2. साहित्य समीक्षा

भारत में भूमंडलीकरण के प्रभावों पर हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि यह प्रक्रिया अर्थव्यवस्था और समाज दोनों पर गहरा असर डालती है। विद्वानों ने इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से परखा है, जिनमें आर्थिक वृद्धि, रोजगार पैटर्न, कृषि और विनिर्माण क्षेत्र, गरीबी तथा असमानता जैसे मुद्दे प्रमुख हैं।

आर्थिक वृद्धि के संदर्भ में श्रीनिवासन (2000, 2011) और कोटवाल, रामस्वामी एवं वधवा (2011) जैसे विद्वानों ने तर्क दिया है कि उदारीकरण नीतियों ने भारत को वैश्विक बाजार से जोड़ा, जिससे तुलनात्मक लाभ, तकनीकी प्रगति और पूंजी प्रवाह में वृद्धि हुई। उनके अनुसार, भूमंडलीकरण ने भारत को धीमी "हिंदू विकास दर" से बाहर निकालकर तीव्र आर्थिक वृद्धि की ओर अग्रसर किया। इसके विपरीत, घोष (2004) और सेनगुप्ता (2001) ने आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए कहा कि भूमंडलीकरण ने आय और अवसरों की असमानता को बढ़ाया और लाभों का वितरण सभी वर्गों में समान रूप से नहीं हुआ। रोजगार के पैटर्न में भी उल्लेखनीय बदलाव देखा गया। Social Research Foundation ने यह दर्शाया कि आईटी और बीपीओ जैसे सेवा क्षेत्रों के विस्तार से लाखों युवाओं को नए रोजगार अवसर मिले। हालांकि, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) और अन्य अध्ययनों का निष्कर्ष है कि संगठित क्षेत्र में स्थायी नौकरियों की जगह ठेका और असुरक्षित रोजगार ने ले ली, जिससे श्रमिकों की सुरक्षा और कल्याण पर नकारात्मक असर पड़ा। वेदांतु जैसे स्रोतों ने यह भी बताया कि विदेशी प्रतिस्पर्धा और आउटसोर्सिंग ने छोटे और मध्यम उद्योगों पर दबाव बढ़ाया, जिसके कारण रोजगार का विस्थापन हुआ।

क्षेत्रीय दृष्टिकोण से, वैश्वीकरण ने कृषि और विनिर्माण दोनों क्षेत्रों पर प्रभाव डाला। रिसर्चगेट और स्प्रिंगरलिंक पर प्रकाशित अध्ययनों में बताया गया है कि कृषि में नकदी फसलों और व्यापारिक कृषि का विस्तार हुआ, जिससे कुछ किसानों को लाभ मिला, लेकिन छोटे किसानों को मूल्य अस्थिरता और सब्सिडी वाले आयात से नुकसान हुआ। इसी प्रकार, विनिर्माण क्षेत्र में तकनीकी उन्नयन हुआ, किंतु छोटे और मध्यम उद्यम (SMEs) बहुराष्ट्रीय कंपनियों की प्रतिस्पर्धा में कमजोर पड़े।

साहित्य समीक्षा सारणी

सारणी 1: भारत में भूमंडलीकरण पर हुए विभिन्न अध्ययनों का सार प्रस्तुत करती है, जिसमें आर्थिक वृद्धि, असमानता, रोजगार, कृषि और गरीबी पर इसके विविध प्रभावों को दर्शाया गया है।

लेखक/स्रोत (Author/Source)	विषय (Theme)	निष्कर्ष (Findings)
श्रीनिवासन (2000, 2011)	आर्थिक वृद्धि	उदारीकरण ने भारत को वैश्विक बाजार में जोड़ा, तकनीकी और पूंजी प्रवाह में वृद्धि हुई।
कोटवाल, रामस्वामी और वधवा (2011)	आर्थिक वृद्धि	उदारीकरण से तुलनात्मक लाभ और आर्थिक प्रगति में तेजी।
घोष (2004)	आर्थिक असमानता	भूमंडलीकरण से आर्थिक असमानता बढ़ी।
सेनगुप्ता (2001)	लाभों का असमान वितरण	लाभ केवल चुनिंदा वर्गों तक सीमित रहे।
Social Research Foundation	आईटी और सेवा क्षेत्र	ज्ञान आधारित सेवाओं से बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न।
अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)	अनौपचारिक रोजगार	ठेका श्रमिकों और असुरक्षित रोजगार में वृद्धि।
वेदांतु	रोजगार विस्थापन	वैश्विक प्रतिस्पर्धा से छोटे और मध्यम उद्योग प्रभावित, नौकरियों का नुकसान।
रिसर्चगेट, स्प्रिंगरलिंक	कृषि क्षेत्र	नकदी फसलों पर जोर, किंतु छोटे किसानों को प्रतिस्पर्धा और मूल्य अस्थिरता से नुकसान।
चंद्रशेखर और घोष (2002)	आय असमानता और क्षेत्रीय असंतुलन	भूमंडलीकरण ने आय और क्षेत्रीय असमानता को गहरा किया।
अमर्त्य सेन (2017)	संतुलित दृष्टिकोण	आर्थिक लाभ के साथ सामाजिक समानता और समावेश पर जोर।
प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (PIB)	गरीबी दर में कमी	2011-12 से 2022-23 तक अत्यधिक गरीबी दर 27.12% से घटकर 5.25% हुई।
कलकत्ता विश्वविद्यालय	गरीबी और असमानता	भूमंडलीकरण ने अमीर और गरीब के बीच खाई को और चौड़ा किया।

गरीबी और असमानता पर भी भूमंडलीकरण का मिश्रित प्रभाव देखा गया है। प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (PIB) के अनुसार, 2011-12 से 2022-23 के बीच अत्यधिक गरीबी दर 27.12% से घटकर 5.25% रह गई। यह भूमंडलीकरण और तेज आर्थिक वृद्धि के सकारात्मक प्रभावों को दर्शाता है। किंतु कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में यह बताया गया कि भूमंडलीकरण ने "एक ही देश में दो देश" जैसी स्थिति पैदा कर दी है, जिसमें एक ओर अमीर और सम्पन्न वर्ग है, जबकि

दूसरी ओर गरीब और वंचित वर्ग। चंद्रशेखर और घोष (2002) ने विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया कि भूमंडलीकरण से क्षेत्रीय असंतुलन और आय असमानता बढ़ी।

संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए अमर्त्य सेन (2017) ने यह सुझाव दिया कि केवल आर्थिक वृद्धि ही पर्याप्त नहीं है। उनके अनुसार, विकास को तभी सार्थक माना जा सकता है जब वह सामाजिक समानता, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी

बुनियादी आवश्यकताओं के साथ संतुलित हो।

समग्र रूप से यह स्पष्ट होता है कि भूमंडलीकरण ने भारत में आर्थिक वृद्धि, सेवा क्षेत्र के विस्तार और गरीबी में कमी जैसे अवसर प्रदान किए, लेकिन इसके साथ ही असमानता, अनौपचारिक रोजगार और पारंपरिक क्षेत्रों की चुनौतियाँ भी उत्पन्न कीं। इसलिए, भूमंडलीकरण का प्रभाव भारत के लिए एक जटिल और मिश्रित परिघटना है, जिसे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टियों से समझना आवश्यक है।

3. शोध विधियाँ

आधुनिक भारत में अर्थव्यवस्था और रोजगार पर भूमंडलीकरण के प्रभाव पर शोध पद्धति एक मिश्रित-तरीका दृष्टिकोण अपनाएगी, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पद्धतियों का मिश्रण होगा। सबसे पहले, 1991 के आर्थिक सुधारों से पहले और बाद के वर्षों के व्यापक आर्थिक आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए मात्रात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाएगा। इसमें सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई), व्यापार मात्रा और रोजगार के आँकड़े शामिल होंगे। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) और राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) जैसे सरकारी स्रोतों से प्राप्त समय-श्रृंखला डेटा का उपयोग सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए किया जाएगा, ताकि आर्थिक संकेतकों में बदलाव और रुझानों का मूल्यांकन किया जा सके। इसके साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के पैटर्न को समझने के लिए एनएसएसओ के रोजगार सर्वेक्षणों से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया जाएगा।

इसके बाद, गुणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से भूमंडलीकरण के सामाजिक और क्षेत्रीय प्रभावों को गहराई से समझा जाएगा। इसमें प्रमुख क्षेत्रों जैसे कृषि, विनिर्माण और सेवा क्षेत्र पर भूमंडलीकरण के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए मामला अध्ययन (case studies) शामिल होंगे। गुणात्मक डेटा के संग्रह के लिए नीति निर्माताओं, उद्योग विशेषज्ञों, और श्रमिकों के साथ साक्षात्कार भी आयोजित किए जाएंगे, जिससे रोजगार की गुणवत्ता और सामाजिक-सांस्कृतिक बदलावों जैसे पहलुओं पर जानकारी मिल सके। शोध में पारदर्शिता सुनिश्चित करने और संभावित पूर्वाग्रहों को कम करने के लिए साहित्यिक समीक्षा भी की जाएगी, जिससे शोध के निष्कर्षों की प्रामाणिकता बढ़ाई जा सके। डेटा विश्लेषण में वर्णनात्मक और तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग किया जाएगा, ताकि भूमंडलीकरण के आर्थिक और सामाजिक प्रभावों को व्यापक रूप से समझा जा सके। अंत में, अध्ययन के दौरान डेटा गोपनीयता और नैतिक सिद्धांतों का पालन

सुनिश्चित किया जाएगा, और निष्कर्षों की सीमाओं को भी स्पष्ट रूप से बताया जाएगा। इस मिश्रित-तरीका दृष्टिकोण से, भूमंडलीकरण के जटिल और बहुआयामी प्रभावों का एक संतुलित और व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सकेगा।

4. परिणाम और चर्चा

आधुनिक भारत में अर्थव्यवस्था और रोजगार पर भूमंडलीकरण के प्रभाव को समझने के लिए, 1991 के आर्थिक सुधारों से पहले और बाद के वर्षों के विभिन्न आर्थिक संकेतकों का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है। आधुनिक भारत में अर्थव्यवस्था और रोजगार पर भूमंडलीकरण के प्रभाव को दर्शाने वाले आँकड़ों को विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों के रिपोर्टों से संकलित किया जा सकता है।

अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

भारत की अर्थव्यवस्था पर 1991 के उदारीकरण से पहले और बाद में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि दर ने गहरा प्रभाव डाला। 1991 से पहले भारत की जीडीपी वृद्धि दर धीमी और अस्थिर थी, जिसे अक्सर "हिंदू विकास दर" कहा जाता था, और यह लगभग 3.5% प्रति वर्ष के आसपास रही। इस अवधि में संरचनात्मक बाधाओं, सीमित औद्योगिक उत्पादन और नियंत्रित अर्थव्यवस्था की नीतियों के कारण विकास दर पर अंकुश था। वहीं, 1991-92 के आर्थिक सुधारों और उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण (LPG) नीतियों के बाद भारत की आर्थिक वृद्धि ने रफ्तार पकड़ी। 1990 के दशक में यह औसतन 5.7% प्रति वर्ष तक पहुँच गई, जबकि 2000 के दशक में यह और बढ़कर 7.3% हो गई। 2015-16 में भारत की जीडीपी वृद्धि दर 7.5% दर्ज की गई। इस प्रकार, सुधारों ने न केवल आर्थिक विकास की गति तेज की बल्कि भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक उभरती हुई शक्ति के रूप में स्थापित करने में भी मदद की। (स्रोत: रिसर्चगेट, टेस्टबुक)

यहाँ कुछ प्रमुख क्षेत्रों के आँकड़ों पर आधारित एक तालिका प्रस्तुत है, जो भूमंडलीकरण के प्रभाव को समझने में मदद करती है। नीचे दी गई जानकारी विभिन्न स्रोतों पर आधारित है।

अर्थव्यवस्था और रोजगार पर भूमंडलीकरण का प्रभाव: आँकड़ों की तालिका

सारणी 2: भूमंडलीकरण से पहले और बाद के प्रमुख आर्थिक संकेतकों की तुलना प्रस्तुत करती है, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था और रोजगार पर इसके सकारात्मक व मिश्रित प्रभावों को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

क्षेत्र	भूमंडलीकरण से पहले (लगभग 1991 से पहले)	भूमंडलीकरण के बाद (विभिन्न वर्षों के आँकड़े)	प्रभाव का संक्षिप्त विवरण
जीडीपी वृद्धि दर	धीमी और अस्थिर (3-4% के आसपास)	1991-92 से 2011-12 लगभग 7% की औसत वृद्धि। 2007-08: 9.7% की उच्च वृद्धि दर।	सकारात्मक: भूमंडलीकरण के बाद आर्थिक विकास में तेजी आई है।
व्यापार-जीडीपी अनुपात	1980 के दशक: 12-15% के बीच	2010: 46% तक बढ़ा	सकारात्मक: अंतरराष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि ने अर्थव्यवस्था को खोला है।
रोजगार (कुल अनुमानित)	2017-18: 47.50 करोड़	2022-23: 59.67 करोड़	मिश्रित: रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है, लेकिन रोजगार का एक बड़ा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक क्षेत्र में है।
सेवा क्षेत्र का निर्यात	1991-97: कुल निर्यात का लगभग 20%	2010: कुल निर्यात का 35% तक बढ़ा	सकारात्मक: भारत सूचना प्रौद्योगिकी (IT) जैसी सेवाओं के निर्यात में एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा।
कृषि का जीडीपी में योगदान	1991 से पहले: जीडीपी में एक बड़ा हिस्सा।	हाल के वर्षों में: केवल 15% के आसपास	नकारात्मक: भूमंडलीकरण के बाद औद्योगिकरण बढ़ने से कृषि क्षेत्र सिकुड़ा है, जिससे किसानों की असुरक्षा बढ़ी है।
गरीबी दर (विश्व बैंक के अनुसार)	1991: उच्च स्तर	2021: 12.9% (क्रय शक्ति समता के आधार पर)	सकारात्मक: गरीबी में कमी आई है, हालांकि असमानता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।
विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI)	1991 से पहले: कम प्रवाह।	1991 के बाद: लगातार वृद्धि, जिसने अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया।	सकारात्मक: एफडीआई के बढ़ने से पूंजी और नई तकनीक का प्रवाह बढ़ा है।
आर्थिक वैश्वीकरण सूचकांक	1970-2022 का औसत: 26.83 अंक	2022: 43.12 अंक	सकारात्मक: भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक बाजारों के साथ अधिक एकीकृत हो गई है।

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI): 1991 के आर्थिक सुधारों से पहले भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) का प्रवाह बेहद सीमित था, क्योंकि देश एक संरक्षणवादी आर्थिक नीति का पालन करता था, जिसमें विदेशी पूंजी पर कड़े प्रतिबंध और नियंत्रण मौजूद थे। इस कारण विदेशी निवेशक भारतीय बाजार में प्रवेश करने से हिचकिचाते थे। लेकिन 1991 के उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) नीतियों के लागू होने के बाद भारत ने विदेशी निवेश के लिए अपने दरवाजे खोल दिए। परिणामस्वरूप एफडीआई में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। वित्त वर्ष 2013-14 में एफडीआई प्रवाह 36.05 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो लगातार बढ़ते हुए 2024-25 में 81.04 बिलियन अमेरिकी डॉलर (अंतिम) तक पहुंच गया। इस वृद्धि ने न केवल भारत की पूंजी संरचना को मजबूत किया बल्कि रोजगार सृजन, तकनीकी हस्तांतरण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारतीय उद्योगों की स्थिति को भी सुदृढ़ किया। (स्रोत: पीआईबी)•

व्यापार-जीडीपी अनुपात: 1991 से पहले भारत का व्यापार-जीडीपी अनुपात अपेक्षाकृत कम था और 1980 के दशक में यह केवल 12-15% के बीच बना रहा। इसका मुख्य कारण संरक्षणवादी नीतियाँ, उच्च टैरिफ और आयात पर कठोर नियंत्रण थे, जिनसे भारत का वैश्विक व्यापार सीमित रहा। लेकिन 1991 के उदारीकरण और वैश्वीकरण नीतियों के बाद व्यापारिक उदारीकरण, टैरिफ कटौती और निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं के चलते भारत की विश्व अर्थव्यवस्था से भागीदारी तेजी से बढ़ी। परिणामस्वरूप, 2022-23 तक निर्यात-जीडीपी अनुपात बढ़कर 22.4% और आयात-जीडीपी अनुपात 25.7% तक पहुंच गया। यह परिवर्तन दर्शाता है कि भारत की अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे आत्मनिर्भरता की नीति से हटकर वैश्विक आपूर्ति शृंखला का सक्रिय हिस्सा बन गई है। (स्रोत: इंडियास्टेट)

गरीबी दर: 1991 से पहले भारत में गरीबी का स्तर काफी ऊँचा था, क्योंकि सीमित आर्थिक वृद्धि, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता और रोजगार सृजन की धीमी गति ने गरीबी उन्मूलन के प्रयासों को कमजोर बनाए रखा। परंतु 1991 के बाद आर्थिक सुधारों और तेज़ विकास दर के परिणामस्वरूप गरीबी दर में उल्लेखनीय गिरावट आई। विशेष रूप से 2011-12 से 2022-23 की अवधि में भारत में अत्यधिक गरीबी दर (3.00 अमेरिकी डॉलर प्रतिदिन से कम आय वाले लोग) 27.12% से घटकर केवल 5.25% रह गई। यह गिरावट आर्थिक अवसरों में वृद्धि, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं, ग्रामीण विकास और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों के बेहतर क्रियान्वयन का परिणाम है। इस प्रकार, उदारीकरण के बाद के वर्षों में गरीबी उन्मूलन के प्रयास कहीं अधिक प्रभावी साबित हुए। (स्रोत: प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो, पीआईबी)

कृषि पर प्रभाव: वैश्वीकरण का भारतीय कृषि पर प्रभाव दोहरे रूप में देखा जा सकता है। सकारात्मक पक्ष पर, इसने भारतीय कृषि को विश्व बाजारों तक पहुंच दिलाई और किसानों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपज बेचने के अवसर प्रदान किए। साथ ही, नई कृषि प्रौद्योगिकियों, जैसे कम जुताई वाली तकनीक और उन्नत बीजों, खादों तथा सिंचाई प्रणालियों का प्रसार तेज़ हुआ, जिससे उत्पादकता और दक्षता में सुधार हुआ। लेकिन नकारात्मक पक्ष पर, उदारीकरण ने घरेलू किसानों को वैश्विक स्तर पर सब्सिडी वाले आयात और अंतरराष्ट्रीय कीमतों में तीव्र उतार-चढ़ाव से कड़ी प्रतिस्पर्धा के सामने ला खड़ा किया। छोटे और सीमांत किसान इस प्रतिस्पर्धा के दबाव को झेलने में अक्सर असमर्थ रहे, जिसके परिणामस्वरूप कई बार उनकी आय में गिरावट आई और गंभीर आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ। यही संकट कुछ क्षेत्रों में किसानों की आत्महत्याओं तक का कारण बना। इस प्रकार, वैश्वीकरण ने कृषि को अवसरों के साथ-साथ गहरे संकटों से भी जोड़ा है। (स्रोत: रिसर्चिंगेट, स्पिंगरलिनक)

रोजगार पर प्रभाव: 1991 के आर्थिक सुधारों से पहले भारत के सेवा क्षेत्र का योगदान सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सीमित था और रोजगार सृजन में इसकी भूमिका अपेक्षाकृत कम थी। लेकिन उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद सेवा क्षेत्र

ने तेजी से विस्तार किया। विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और व्यापार प्रक्रिया आउटसोर्सिंग (बीपीओ) उद्योगों ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत को एक प्रतिस्पर्धी गंतव्य बना दिया। इस वृद्धि ने लाखों युवाओं को नए रोजगार अवसर प्रदान किए और भारत के शहरी आर्थिक परिदृश्य को बदल दिया। सेवा क्षेत्र की इस प्रगति ने न केवल रोजगार सृजन को बढ़ावा दिया बल्कि विदेशी मुद्रा अर्जन और तकनीकी कौशल विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार, 1991 के बाद सेवा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था और रोजगार का एक प्रमुख स्तंभ बनकर उभरा। (स्रोत: नेक्स्ट आईएसएस, वेदांत)

अनौपचारिकीकरण: 1991 के आर्थिक सुधारों और वैश्वीकरण के बाद भारतीय श्रम बाजार में अनौपचारिकीकरण (Informalization) की प्रवृत्ति तेज़ हुई। संगठित क्षेत्र में स्थायी रोजगार के अवसर घटने लगे, जबकि अनौपचारिक क्षेत्र में रोजगार में वृद्धि हुई। इसका मुख्य कारण यह था कि विदेशी प्रतिस्पर्धा और लागत में कटौती के दबाव से कंपनियाँ स्थायी कर्मचारियों की बजाय ठेका श्रमिकों को काम पर रखने लगीं। ऐसे श्रमिकों को कम वेतन और सीमित सामाजिक सुरक्षा लाभ मिलते हैं, जिससे वे असुरक्षित परिस्थितियों में काम करने को मजबूर होते हैं। इस प्रकार, उदारीकरण ने जहाँ नए अवसर पैदा किए, वहीं श्रम बाजार में रोजगार की गुणवत्ता और सुरक्षा को भी चुनौती दी। (स्रोत: आईएसएस गूगल, फोरम आईएसएस)

रोजगार का विस्थापन: 1991 के बाद वैश्वीकरण और उदारीकरण ने जहाँ एक ओर नई आर्थिक संभावनाएँ खोलीं, वहीं दूसरी ओर रोजगार के विस्थापन की समस्या भी उत्पन्न की। विदेशी प्रतिस्पर्धा और आउटसोर्सिंग के दबाव के कारण श्रम-प्रधान उद्योगों, विशेषकर छोटे और मध्यम उद्योगों (SMEs), को कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा। सस्ते आयात और वैश्विक प्रतिस्पर्धा ने कई घरेलू उद्योगों की बाजार हिस्सेदारी घटा दी, जिससे इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में नौकरियों का विस्थापन हुआ। इस प्रकार, उदारीकरण ने रोजगार के नए अवसरों के साथ-साथ परंपरागत रोजगार क्षेत्रों में असुरक्षा और अस्थिरता भी बढ़ाई। (स्रोत: वेदांत)

5. चर्चा (Discussion)

5.1. आर्थिक वृद्धि पर प्रभाव: 1991 के उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। परिणाम बताते हैं कि 1990 के दशक में औसत जीडीपी वृद्धि दर 5.7% रही, जबकि 2000 के दशक में यह बढ़कर 7% से अधिक हो गई। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) प्रवाह भी 2013-14 के 36.05 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2024-25 में 81.04 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया। यह स्पष्ट करता है कि वैश्वीकरण ने भारत को वैश्विक पूंजी और तकनीकी प्रवाह से जोड़ा। हालांकि, चर्चा के स्तर पर यह भी देखा गया कि इस वृद्धि का लाभ समान रूप से वितरित नहीं हुआ और असमानताओं में वृद्धि हुई (घोष, 2004; सेनगुप्ता, 2001)।

5.2. रोजगार पैटर्न और श्रम बाजार: परिणाम बताते हैं कि आईटी और बीपीओ जैसे सेवा क्षेत्रों में भूमंडलीकरण के कारण बड़े पैमाने पर रोजगार उत्पन्न हुए। लाखों युवाओं को नए अवसर मिले और शहरी अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। दूसरी ओर, संगठित क्षेत्र में स्थायी नौकरियों की जगह ठेका और असुरक्षित रोजगार ने ले ली। ILO के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि अनौपचारिकीकरण से श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा और वेतन दोनों प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त, विदेशी प्रतिस्पर्धा और आउटसोर्सिंग ने छोटे और मध्यम उद्योगों पर दबाव डाला, जिससे रोजगार का विस्थापन हुआ। चर्चा से यह स्पष्ट है कि भूमंडलीकरण ने रोजगार के अवसर बढ़ाए, लेकिन उनकी गुणवत्ता और स्थिरता पर गंभीर प्रश्न खड़े किए।

5.3. कृषि और विनिर्माण क्षेत्र: अध्ययन से प्राप्त परिणाम दर्शाते हैं कि वैश्वीकरण ने भारतीय कृषि को विश्व बाजार से जोड़ा और नकदी फसलों की ओर रुझान बढ़ाया। नई तकनीकों, जैसे कम जुताई वाली तकनीक और उन्नत बीजों के उपयोग से उत्पादकता बढ़ी। लेकिन छोटे किसानों के लिए मूल्य अस्थिरता और

सब्सिडी वाले आयात गंभीर चुनौतियाँ बन गए। कई अध्ययनों ने इसे किसानों की आत्महत्या जैसी त्रासद घटनाओं से जोड़ा। विनिर्माण क्षेत्र में तकनीकी प्रगति और प्रतिस्पर्धा बढ़ी, किंतु SMEs बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दबाव से कमजोर हुए। चर्चा में यह उभरता है कि कृषि और विनिर्माण दोनों क्षेत्रों पर प्रभाव मिश्रित रहा—अवसर और चुनौतियाँ साथ-साथ मौजूद रहीं।

5.4. गरीबी और असमानता: आँकड़े दर्शाते हैं कि 2011-12 से 2022-23 के बीच अत्यधिक गरीबी दर 27.12% से घटकर 5.25% हो गई। यह भूमंडलीकरण और आर्थिक सुधारों के सकारात्मक प्रभावों को इंगित करता है। हालांकि, कलकत्ता विश्वविद्यालय के शोध और घोष (2004) के अध्ययन बताते हैं कि असमानता की खाई और चौड़ी हो गई। चंद्रशेखर और घोष (2002) ने क्षेत्रीय असंतुलन को रेखांकित किया, जबकि अमर्त्य सेन (2017) ने सुझाव दिया कि विकास तभी सार्थक है जब वह सामाजिक समानता और बुनियादी सेवाओं की पहुँच के साथ संतुलित हो।

समग्र चर्चा: परिणामों का समग्र विश्लेषण यह दर्शाता है कि भूमंडलीकरण ने भारत की आर्थिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। इसने आर्थिक वृद्धि, सेवा क्षेत्र में रोजगार और गरीबी उन्मूलन में योगदान दिया, लेकिन असमानता, रोजगार विस्थापन और कृषि संकट जैसी समस्याएँ भी बढ़ाईं। चर्चा से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में भूमंडलीकरण एक द्विआयामी प्रक्रिया है—एक ओर विकास और अवसर, तो दूसरी ओर असुरक्षा और असमानता। इसलिए नीति-निर्माताओं के लिए चुनौती यह है कि वे ऐसी रणनीतियाँ विकसित करें जो आर्थिक वृद्धि के साथ सामाजिक न्याय और समानता को भी सुनिश्चित करें।

निष्कर्ष

इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि भूमंडलीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जीडीपी वृद्धि दर, एफडीआई प्रवाह और सेवा क्षेत्र में रोजगार सृजन इसके प्रमुख सकारात्मक परिणाम रहे हैं। गरीबी दर में कमी भी भूमंडलीकरण के सकारात्मक पक्ष को दर्शाती है। परंतु इसके साथ ही आर्थिक असमानता, कृषि पर दबाव, अनौपचारिक रोजगार और छोटे-मध्यम उद्योगों की असुरक्षा जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। इन निष्कर्षों से यह संदेश मिलता है कि भारत में भूमंडलीकरण एक “जटिल और मिश्रित परिघटना” है—यह विकास और अवसर लेकर आया है, लेकिन असमानता और अस्थिरता भी साथ लाया है। इसलिए, नीति-निर्माताओं के लिए आवश्यक है कि वे ऐसी “समावेशी और संतुलित आर्थिक नीतियाँ” अपनाएँ जो न केवल आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित करें, बल्कि सामाजिक समानता, रोजगार की गुणवत्ता और कृषि सुरक्षा को भी सुनिश्चित करें। इस प्रकार, भारत में सतत और न्यायसंगत विकास के लिए भूमंडलीकरण की चुनौतियों और अवसरों दोनों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

संदर्भ

1. घोष, अजीत के. "ग्लोबलाइजेशन, ग्रोथ एंड एम्प्लॉयमेंट इन इंडिया." *इंस्टीट्यूट फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट, वर्किंग पेपर*, 2014.
2. कुमार, सी. राज. "लीगल एजुकेशन, ग्लोबलाइजेशन, एंड इंस्टीट्यूशनल एक्सीलेंस: चैलेंजिस फॉर द रूल ऑफ लॉ एंड एक्सेस टू जस्टिस इन इंडिया." *इंडियाना जर्नल ऑफ ग्लोबल लीगल स्टडीज*, vol. 20, no. 1, 2013, pp. 221-252.
3. माधोक, बिंदू और राज, सेल्वा जे. "ग्लोबलाइजेशन, हायर एजुकेशन, एंड वीमेन इन अर्बन इंडिया: अ डेवलपमेंट एथिक्स अप्रोच." *जर्नल ऑफ थर्ड वर्ल्ड स्टडीज*, vol. 28, no. 1, 2011, pp. 141-154.
4. दवे, आर., और दवे, डी. "ग्लोबलाइजेशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन इंडियन इकोनॉमी." *रिसर्चगेट*, 2013.
5. घोष, अजीत के. "द एम्प्लॉयमेंट चैलेंज इन इंडिया." *इकोनॉमिक एंड*

- पॉलिटिकल वीकली, vol. 39, no. 48, 2004, pp. 5106-5116.
6. गोयल, के. ए. "इम्पैक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन ऑन डेवलपिंग कंट्रीज (विद स्पेशल रेफरेंस टू इंडिया)." *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ फाइनेंस एंड इकोनॉमिक्स*, vol. 5, 2006, pp. 166-171.
7. सेन गुप्ता, चंदन. "कॉन्सेप्चुअलाइजिंग ग्लोबलाइजेशन." *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 18 अगस्त 2001.
8. कुमार, ए. "इकोनॉमिक ग्रोथ एंड इनकम इनईक्वालिटी इन इंडिया: एन एनालिटिकल स्टडी." *जर्नल ऑफ सोशल एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट*, vol. 19, no. 2, 2017, pp. 265-282.
9. भागवती, जगदीश. *इन डिफेंस ऑफ ग्लोबलाइजेशन*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004.
10. पन्नागरिया, अरविंद. *इंडिया: द इमर्जिंग जायंट*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008.
11. स्टिग्लिट्ज, जे. ई. *ग्लोबलाइजेशन एंड इट्स डिसकंटेंट्स*. डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी, 2002.
12. ट्रेजे, ज., और सेन, ए. *एन अनसर्टेन ग्लोरी: इंडिया एंड इट्स कंट्राडिक्शंस*. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013.
13. पीआईबी (प्रेस इंफॉर्मेशन ब्यूरो). *एफडीआई से संबंधित आँकड़े*. भारत सरकार, 2024.
14. पीआईबी (प्रेस इंफॉर्मेशन ब्यूरो). *भारत में गरीबी दर में कमी पर रिपोर्ट*. भारत सरकार, 2024.
15. आईएचडी (इंस्टीट्यूट फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट). *ग्लोबलाइजेशन, ग्रोथ एंड एम्प्लॉयमेंट इन इंडिया*. नई दिल्ली, 2014.
16. विश्व बैंक. *विश्व गरीबी और असमानता रिपोर्ट*. विश्व बैंक समूह, 2023.
17. प्रेस इंफॉर्मेशन ब्यूरो (पीआईबी). *भारत में गरीबी दर में कमी पर रिपोर्ट*. भारत सरकार, 2024.
18. आईएलओ (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन). *ग्लोबलाइजेशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन एम्प्लॉयमेंट*. 2017.
19. टेस्टबुक. *वैश्वीकरण: अर्थ, कारण और भारत पर प्रभाव*. 2024.
20. "भारत में वैश्वीकरण." *विकिपीडिया*, 2024, en.wikipedia.org/wiki/भारत_में_वैश्वीकरण.
21. मनीपत्रा. *ग्लोबलाइजेशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन इंडियन इकोनॉमी*. 2022.
22. रिसर्चगेट. *ग्लोबलाइजेशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन इंडियन इकोनॉमी*. 2016.
23. नीति आयोग. *नीतिगत दस्तावेजों और रिपोर्टों का संग्रह*. भारत सरकार, 2023.
24. भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई). *वार्षिक रिपोर्ट और सांख्यिकी हैंडबुक*. भारतीय रिजर्व बैंक, 2024.